an>

Title: Need to set up more number of medical colleges in the country.

प्रो.चिंतामणि मालवीय (उज्जैन) : माननीय सभापति जी, मैं बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर बात करना चाहता हूं। सभापति जी, भारत की स्वास्थ्य सेवाएं बीमार हैं और भारत की जीडीपी का 1.3 प्रतिशत स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च होता है और वर्तमान बजट में उसे और बढ़ाया गया है। किंतु देश के गांवों और कस्बों में स्वास्थ्य की स्थिति बहुत खराब है। डॉक्टर्स नहीं हैं, नर्सें नहीं हैं और पूर्व में बढ़ाया गया बजट डॉक्टर्स के अभाव में भ्रष्टाचार की भेंट हो जाता है। करीब 120 करोड़ की जनसंख्या वाले इस देश में केवल 381 मेडीकल कॉलेज हैं और उनमें से भी केवल 169 सरकारी मेडीकल कालेज हैं और शेष 212 मेडीकल कॉलेज या तो ट्रस्टों के हैं या प्राइवेट हैं। प्राइवेट कॉलेजेज में 40 से 50 लाख रुपये में डॉक्टर बनता है और कोई व्यक्ति अगर 40 से 50 लाख में डॉक्टर बनता है तो वह गांव और कस्बों में अपनी सेवा नहीं देगा, वह प्राइवेट अस्पतालों में अपनी सेवा देगा। डॉक्टरों की कमी के कारण चिकित्सा का गौरवशाली और नैतिक पेशा व्यापारिक हो गया है और लोगों के शोषण का माध्यम बन गया है।

आज देश में लगभग 10 लाख नर्सों की कमी है और केवल सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों पर दो से तीन लाख नर्सों की कमी है। माननीय प्रधान मंत्री जी ने बहुत ही स्तुत्य संकल्पना दी है कि 100 स्मार्ट सिटीज बनाए जाएंगे। उनकी इस स्तुत्य संकल्पना को प्रणाम करते हुए मैं चाहूंगा कि इस देश में 100 मेडीकल कॉलेजों की भी आवश्यकता है और ये कॉलेज सरकारी होने चाहिए जिससे कम पैसों में डॉक्टर्स बन सकें।